फिर भी मैं उठूंगी

BY MAYA ANGELOU

तुम चाहे लिख दो इतिहास में
मेरे बारे में कड़वे, विकृत झूठ,
तुम चाहे रौंद दो कीचड़ में मुझे
मैं फिर भी बनके धूल,उठूंगी।

क्या मेरा बेबाक पन तुम्हें परेशान करता है?
क्यों घिरे हुए हो दुख में तुम देख कर मेरी चाल?
जैसे हों मेरे कक्ष में तेल के कुएं कईं हज़ार।

बिल्कुल चाँद और सूरज की तरह,
ज्वार के आत्मविश्वास की तरह,
बढ़ती उम्मीदों के अंकुरों की तरह,
मैं उठूंगी।

क्या तुम देखना चाहते हो मुझे टूटे हुए?
सर झुकाए, आंखें नीची किए हुए?
बेहते आंसुओं की तरह कंधे गिरे हुए ,
कमज़ोर पढ़ते हुए अपनी भावपूर्ण याचनाओं से?

क्या मेरा स्वाभिमान तुम्हें उत्तेजित करता है?

क्या इतना कठिन है तुम्हारे लिए मुझेे देखना हसतें जैसे हो मेरे पास सोने की खदानें कईं हज़ार।

बाण चला सकते हो अपने कठोर शब्दों का मुझ पर,

चीर सकते हो मुझे अपनी नजरों से,

मार सकते हो मुझे अपनी नफ़रत से,

पर फिर भी हवा की तरह,

मैं उठूंगी।

क्या मेरा अल्हड़पन तुम्हें हैरान करता है?

क्या चौंक जाते हो तुम कि मैं थरथराती हूं

जैसे हीरे गड़े हो मेरे अंग अंग में।

उसी शर्मनाक इतिहास से मैं उठूंगी

उसी दर्दनाक अतीत से मैं उठूंगी

मैं वह काला महासागर हूं जो अंतकाल तक बस आगे फैल रहा है,

पनप रही हूं मैं उसी उठते गिरते ज्वार में।

डर और अंधकार को पीछे पछाड़कर

मैं उठूंगी

एक ऐसे उजाले में जो स्वयं प्रकाशित है

मैं उठूंगी

अपने पूर्वजों की धरोहर के साथ,

उन गुलामों का एक सपना और उम्मीद बन के।

मैं उठूंगी

मैं उठूंगी

मैं उठूंगी।

Translated by: Garima Singh

Scholar, Department of English, University of Jammu